



महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
जनसंपर्क कार्यालय
PUBLIC RELATIONS OFFICE



डिजिटल विश्व में एआई साक्षर होना जरूरी

कृत्रिम बुद्धि : शिक्षा, समाज एवं नवाचार विषय पर प्री-समित राष्ट्रीय संगोष्ठी में वक्ताओं ने रखे विचार
वर्धा, 05 फरवरी 2026 : महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में भाषा प्रौद्योगिकी एवं भाषा अभियांत्रिकी विभाग, भाषा विद्यापीठ



पोस्ट हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स, वर्धा-442001 (महाराष्ट्र), भारत

ई-मेल/E-mail: pro.mgahv@hindivishwa.ac.in वेबसाइट/Website: www.hindivishwa.org

दूरभाष : +91-7152-252651 मोबाइल/Mobile : 9960562305



महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
जनसंपर्क कार्यालय
PUBLIC RELATIONS OFFICE



की ओर से दो दिवसीय कृत्रिम बुद्धि : शिक्षा, समाज एवं नवाचार विषय पर प्री-समित राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन 05 फरवरी को कस्तूरबा सभागार में किया गया। उद्घाटन सत्र में एआई विशेषज्ञ उपस्थित वक्ताओं ने माना की आज के डिजिटल विश्व में एआई साक्षर होना जरूरी है। एआई एक तरफ हमारे लिए चुनौती है तो दूसरी ओर यह रोजगार के अनेक अवसर भी प्रदान करता है। आगामी भविष्य में हमें सभी चुनौतियों को

स्वीकार करते हुए इसके साथ चलना पड़ेगा। उद्घाटन कार्यक्रम की अध्यक्षता भाषा विद्यापीठ की अधिष्ठाता, संगोष्ठी निदेशक प्रो. प्रीति सागर ने की। इस अवसर पर भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान, नागपुर की सहायक प्रोफेसर डॉ. वसुधरा राठोड़ ने एआई को सरल शब्दों में समझाते हुए बताया कि हम हर दिन सुबह उठने से लेकर सोने तक दैनिक जीवन में किसी ना किसी रूप में एआई का उपयोग करते हैं। एआई हमारे काम में सहायक के रूप में मदद करता है, परंतु मानव बुद्धि मशीनी बुद्धि का स्थान नहीं ले सकती। उन्होंने उदाहरणों के साथ विभिन्न एआई मॉडल की चर्चा की।

प्रिंसिपल साइंटिफिक ऑफिसर, पीएसओ, एमगिरी, वर्धा के डॉ. श्रवण चांडक ने एआई की संभावनाओं और चुनौतियों चर्चा करते हुए कहा कि एआई हमें सस्ते में विकल्प उपलब्ध कराता है, जिसका हमें कृषि और स्वास्थ्य जैसे क्षेत्र में उपयोग हो सकता है। एआई से रोजगार बढ़ेगा, साथ ही उत्पादकता भी बढ़ेगी। कृषि में शीत गृह से उत्पाद खराब होने से किसानों की आय में वृद्धि हो सकेगी। उन्होंने कहा कि एआई में भावनाओं का विश्लेषण किया जा रहा है। चीफ एआई साइंटिस्ट, अर्जेथिक्स प्रायवेट लिमिटेड, बेंगलुरु के डॉ. अर्पित यादव ने ऑनलाइन संबोधित करते हुए जनरेटिव एआई और उद्योग तथा समाज में बदलाव विषय पर वक्तव्य दिया। एसोसिएट डीन अकादमिक, भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान, नागपुर के डॉ. तौसीफ दीवान ने मल्टी मोडल डेटा की आवश्यकता, जिरो शॉर्ट लर्निंग, प्रॉम्प्ट आदि की चर्चा करते हुए इसकी उपयोगिता पर प्रकाश डाला।

अध्यक्षीय वक्तव्य में प्रो. प्रीति सागर ने कहा कि भले ही एआई आज की पीढ़ी के लिए चुनौती है परंतु इस चुनौती का सामना करना ही होगा। अपने दृष्टिकोण को सकारात्मक रखते हुए हमें एआई को अपनाना होगा। उन्होंने कहा कि एआई मनुष्य के ऊपर नहीं हो सकता। कार्यक्रम का प्रारंभ दीप प्रज्ज्वलन एवं कुलगीत से किया गया। अतिथियों का स्वागत विश्वविद्यालय के प्रतीक चिन्ह से किया गया। कार्यक्रम का संचालन भाषा प्रौद्योगिकी एवं भाषा अभियांत्रिकी विभाग की प्रभारी, संगोष्ठी संयोजक डॉ. हर्षलता पेटकर ने किया तथा लीला प्रभारी, संगोष्ठी समन्वयक डॉ. अंजनी कुमार राय ने धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर प्रो. जनार्दन कुमार तिवारी, डॉ. बालाजी चिरडे, डॉ. रवींद्र बोरकर, डॉ. एच.ए. हुनगुंद, डॉ. अमरेंद्र कुमार शर्मा, डॉ. दिव्या शुक्ला, आनंद भारती, डॉ. विजय सिंह, डॉ. अंजना, सागर इखे, डॉ. तुफान सिंह पारधी, डॉ. हेमलता गोडबोले, डॉ. प्रवेश द्विवेदी, बी.एस. मिरगे सहित बड़ी संख्या में शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित थे।

डिजिटल विश्वात एआय साक्षरता आवश्यक

कृत्रिम बुद्धिमत्ता : शिक्षण, समाज आणि नवोन्मेष या विषयावर प्री-समित राष्ट्रीय परिसंवादात वक्त्यांचे मत
वर्धा, ०५ फेब्रुवारी २०२६ : महात्मा गांधी आंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालयातील भाषा प्रौद्योगिकी व भाषा अभियांत्रिकी विभाग, भाषा विद्यापीठ यांच्या वतीने 'कृत्रिम बुद्धिमत्ता : शिक्षण, समाज आणि नवोन्मेष' या विषयावर दोन दिवसीय प्री-समित राष्ट्रीय परिसंवादाचे उद्घाटन ०५ फेब्रुवारी रोजी कस्तूरबा सभागृहात करण्यात आले. उद्घाटन सत्रात उपस्थित एआय तज्ज्ञ वक्त्यांनी आजच्या डिजिटल विश्वात एआय साक्षरता अत्यंत आवश्यक असल्याचे मत व्यक्त केले. एआय एकीकडे आव्हान असले तरी दुसरीकडे रोजगाराच्या अनेक संधीही निर्माण करतो. येणाऱ्या काळात सर्व आव्हाने स्वीकारत एआयसह पुढे जाणे गरजेचे आहे, असे त्यांनी नमूद केले.

उद्घाटन कार्यक्रमाच्या अध्यक्षस्थानी भाषा विद्यापीठाच्या अधिष्ठाता व परिसंवाद संचालक प्रो. प्रीति सागर होत्या. यावेळी भारतीय माहिती तंत्रज्ञान संस्था, नागपूर येथील सहायक प्रोफेसर डॉ. वसुधरा राठोड यांनी एआयची सोप्या शब्दांत माहिती देत सांगितले की, आपण सकाळी उठल्यापासून रात्री झोपेपर्यंत दैनंदिन जीवनात कुठल्या ना कुठल्या स्वरूपात एआयचा वापर करत

पोस्ट हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स, वर्धा-442001 (महाराष्ट्र), भारत

ई-मेल/E-mail: pro.mgahv@hindivishwa.ac.in वेबसाइट/Website: www.hindivishwa.org

दूरभाष : +91-7152-252651 मोबाइल/Mobile : 9960562305



महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
जनसंपर्क कार्यालय
PUBLIC RELATIONS OFFICE



असतो. एआय आपल्याला सहायक म्हणून मदत करतो; मात्र मानवी बुद्धिमत्ता ही यंत्रबुद्धिमत्तेची जागा घेऊ शकत नाही. त्यांनी उदाहरणांसह विविध एआय मॉडेल्सची चर्चा केली. एमगिरी, वर्धा येथील प्रिन्सिपल सायंटिफिक ऑफिसर डॉ. श्रवण चांडक यांनी एआयच्या संधी व आव्हानांवर चर्चा करताना म्हणाल्या की, एआयमुळे स्वस्त पर्याय उपलब्ध होत असून त्याचा उपयोग कृषी व आरोग्य क्षेत्रात होऊ शकतो. एआयमुळे रोजगार व उत्पादकता दोन्ही वाढतील. कृषी क्षेत्रात शीतगृहांच्या माध्यमातून उत्पादन खराब होण्याचे प्रमाण कमी होऊन शेतकऱ्यांचे उत्पन्न वाढू शकते. त्यांनी एआयमध्ये भावनांचे विश्लेषणही केले जात असल्याचे सांगितले. अर्जेथिक्स प्रायव्हेट लिमिटेड, बेंगळुरू येथील चीफ एआय सायंटिस्ट डॉ. अर्पित यादव यांनी ऑनलाइन माध्यमातून 'जनरेटिव्ह एआय आणि उद्योग व समाजातील बदल' या विषयावर आपले विचार मांडले. भारतीय माहिती तंत्रज्ञान संस्था, नागपूरचे असोसिएट डीन (अकादमिक) डॉ. तौसीफ दीवान यांनी मल्टी-मोडल डेटाची आवश्यकता, झिरो-शॉट लर्निंग, प्रॉम्प्ट्स आदी विषयांवर चर्चा करत त्यांची उपयुक्तता स्पष्ट केली.

अध्यक्षीय भाषणात प्रो. प्रीती सागर म्हणाल्या की एआय ही आजच्या पिढीसाठी आव्हान असली तरी त्या आव्हानांचा सामना करणे अपरिहार्य आहे. सकारात्मक दृष्टिकोन ठेवून एआय स्वीकारणे आवश्यक असून एआय कधीही माणसाच्या वर असू शकत नाही, असे त्यांनी स्पष्ट केले.

कार्यक्रमाची सुरुवात दीपप्रज्ज्वलन व कुलगीताने झाली. पाहुण्यांचे स्वागत विद्यापीठाच्या प्रतीकचिन्हाने करण्यात आले. कार्यक्रमाचे संचालन भाषा प्रौद्योगिकी व भाषा अभियांत्रिकी विभागाच्या प्रभारी व परिसंवाद संयोजक डॉ. हर्षलता पेटकर यांनी केले, तर परिसंवाद समन्वयक डॉ. अंजनी कुमार राय यांनी आभार मानले. या वेळी प्रो. जनार्दन कुमार तिवारी, डॉ. बालाजी चिरडे, डॉ. रवींद्र बोरकर, डॉ. एच. ए. हुनगुंद, डॉ. अमरेंद्र कुमार शर्मा, डॉ. दिव्या शुक्ला, आनंद भारती, डॉ. विजय सिंह, डॉ. अंजना, सागर इखे, डॉ. तुफान सिंह पारधी, डॉ. हेमलता गोडबोले, डॉ. प्रवेश द्विवेदी, बी. एस. मिरगे यांच्यासह मोठ्या संख्येने शोधार्थी व विद्यार्थी उपस्थित होते.

पोस्ट हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स, वर्धा-442001 (महाराष्ट्र), भारत

ई-मेल/E-mail: pro.mgahv@hindivishwa.ac.in वेबसाइट/Website: www.hindivishwa.org

दूरभाष : +91-7152-252651 मोबाइल/Mobile : 9960562305